ISSN 2319-5339 IIS Univ.J.A. Vol.10 (2), 357-62 (2021)

विंसेंट वानगो व ट्रेसि एमिन की कलाकृतियों का आत्मकथात्मक विश्लेषण

पूजा प्रजापत

शोध सार

19वीं शताब्दी के उत्तरप्रभाववादी चित्रकार "विंसेंट वानगो" और ब्रिटिश समकालीन महिला कलाक. ार "ट्रेसि एमिन" पाश्चात्य कला के दो युगों से संबंध रखते हुए अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति की मूल प्रेरणा में समानता के साथ माध्यम की भिन्नता को परिलक्षित करती है। दोनों ही कलाकार पाश्चात्य कला में अपने काल के नए परिवर्तनों के कला-आंदोलनों के प्रवर्त्तक रहे हैं। इन्होंने यथार्थ को अपने सृजन का माध्यम बनाया। इस शोध-पत्र में वानगो की कलाकृति "बैडरूम" तथा ट्रेसि एमिन की कलाकृति "माई बेड" का आत्मकथात्मक विश्लेषण करते हुए उनकी तत्कालीन मनोस्थिति की समीक्षा प्रस्तुत की गई है।

बीज शब्द : आत्मकथात्मक; कलाकृति; ट्रेसि एमिन उत्तरप्रभाववादी अभिव्यंजनावाद; विंसेंट वानगा; संस्थापन।

भूमिका

19वीं शताब्दी के उत्तरप्रभाववादी चित्रकार "विंसेंट वानगो" और ब्रिटिश समकालीन महिला कला. कार "ट्रेसि एमिन" की गणना पाश्चात्य कला के महान् कलाकारों में की जाती है। आधुनिक विद्वानों द्वारा दोनों के कृतित्व में समानता को देखते हुए दोनों का नाम एक साथ जोड़ा जाता रहा है। मजेदार बात यह है कि दृश्यकला के दो युगों से संबंध रखने वाले इन दोनों चित्रकारों की रचनाओं में भिन्नता होते हुए भी मूल प्रेरणा में समानता दृष्टिगोचर होती है। ''नील ब्राउन के अनुसार- मुंख, वानगो और ट्रेसि एमिन कलाकारों की त्रिमूर्ति है जिनका काम शारीरिक और मानसिक वेदना को दर्षाता है। ''[1] वास्तव में यह वक्तव्य सीधे ही ऐसे दो कलाकारों के कार्यों की ओर इशारा करता है जिन्होंने अपनी कलात्मक प्रतिभा को कुछ इस तरह से अभिव्यक्त किया है कि पाश्चात्य कला का परिदृष्य ही बदल गया। वे दो कलाकार हैं- विंसेंट वानगो और ट्रेसि एमिन।

इन दोनों कलाकारों के कलाकार्य दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। दोनों ही पाश्चात्य कला

में अपने काल के नए परिवर्तनों के आंदोलन के प्रवर्तक भी रहे हैं। दोनों में बहुत-सी समानताएँ एवं असामानताएं मौजूद हैं। यों तो दोनों कलाकारों की अभिव्यक्ति के माध्यम अलग-अलग हैं लेकिन दोनों ही कलाकार दृश्यकला के क्षेत्र में काफी प्रसिद्ध रहे हैं। दोनों कलाकारों ने संघर्षरत रहते हुए जीवन के भोगे हुए यथार्थ को अपने सृजन का माध्यम बनाया है। उनका जीवन एवं उनकी कला एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

असल में, वानगो से पहले पाश्चात्य चित्रकला में प्रभाववाद का बोला-बाला था। उस समय चित्रक. ार अपनी कल्पना व भावों को अभिव्यक्त करने के लिए स्वतंत्र नहीं था तथा जब प्रभाववाद का प्रचार-प्रसार हो रहा था, तभी दूसरी तरफ से कुछ चित्रकार उससे असंतुष्ट होकर अभिव्यक्ति की नई शैलियों की खोज में लगे थे। उनमें से विसेंट वानगो एक प्रमुख चित्रकार रहे हैं जिन्होंने अपने हृदय की गहराइयों से कल्पना दृष्टि को साकार करने के प्रयत्नों में अपरिमित संघर्षों का सामना कर अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। अतः पाश्चात्य चित्रकला के इतिहास में उत्तर प्रभाववाद वो काल खंड बन गया जिसने विशेष योगदान देकर आधुनिक कलाकारों के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य किया है।

एक तरफ उत्तरप्रभाववादी चित्रकार "विंसेंट वानगो" है जिनके कलाकर्म से अभिव्यंजनावाद तथा अन्य कई वादों का जन्म हुआ जिससे कलाकार अपनी कल्पना व अभिव्यंजना को चित्रित करने में सफल हुए। वस्तुतः वानगो का जीवन एक दुःखी हृदय की आदर्श कहानी है जो कलाकारों के साथ-साथ प्रत्येक को प्रेरित कर रही है। तो दूसरी तरफ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात "ट्रेसि एमिन" ब्रटिश समकालीन महिला कलाकार है जो कि अपनी प्रयोगवादी कला के लिए जानी जाती है। इन पर अभिव्यंजनावादी कलाकार "एडवर्ड मुंख" व "इगोन शिले" का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। वर्तमान में वे रॉयल अकादमी, लंदन में चित्रकला विषय की पहली दो महिला प्रोफेसरों में से एक हैं। ये बेबाक रूप से अपनी आत्मकथात्मक रचनाओं को लगातार प्रकट कर रही हैं। सन् 1990 के प्रारंभिक काल में अपनी रचनाओं के कारण ब्रिटिश समकालीन कला की सर्वाधिक चर्चित कलाकार रही हैं।

इस शोधपत्र में विंसेंट वानगो व ट्रेसि एमिन- इन दो कलाकारों की एक-एक कलाकृति का आत्मक. थात्मक विश्लेषण करने हेतु चयनित किया है जिन्होंने कला की परिभाषा ही बदल कर रख दी है। इन दोनों कलाकृतियों का आत्मकथात्मक विश्लेषण इस प्रकार से हैः-

(क) बैडरूम (विंसेंट वानगो)ः-

यह चित्र आर्लेस (फ्रांस) में अक्तूबर 1888 के दौरान तेलरंग से कैनवास पर चित्रित किया गया है। ''यह चित्र वानगो संग्रहालय, एम्सटर्डम में संग्रहित है।''[2] आर्लेस में वानगो पीले रंग का घर किराए पर लेते हैं। इस घर से उन्हें बेहद प्यार था। उनके हृदय में जीवनभर एक घर बसाने की लालसा हमेशा से रही थी। इस घर के जरिए वे अपनी उसी लालसा को पूरा करते हैं। इस घर की प्रत्येक वस्तु व आंतरिक साजसज्जा का संपूर्ण कार्य वानगो बड़े मनोयोग से पूर्ण करते हैं।

इस घर को वे एक स्थाई स्टूडियो बनाना चाहते थे, जहाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी आकर चित्रकार दक्षिण के चित्र बनाया करेंगे। उन्होंने इस घर में रहने के लिए अपने साथी कलाकार गोगां को आमंत्रित किया। अगर यह कहा जाए कि इस घर को सजाना और स्थाई स्टूडियो की कामना करना उनके जीवन का सुखद समय था, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। ''इस मकान ने उन्हें एक शांति से भर दिया।''[3]

बैडरुम की दीवारों पर विन्सेंट ने हल्का बैंगनी रंग किया। बहुत हल्के हरे रंग की चादरें और तकियों के गिलाफ खरीदे। बिस्तर को ताजे मक्खन के रंग में रंगा। दीवारों पर अपनी कई पेंटिंग्स लगाई। अतः जिस विरोधाभासी रंग-संगति द्वारा इच्छित प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास वानगो ने किया है उसमें पीले रंग की अधिकता का आभास होता है।

बैडरूम में बायीं और दर्पण जिसके पास एक तोलियाँ व कुछ कपड़े टंगे हैं।

कमरे में प्रवेश करते ही दाँयी ओर बैड है जोकि दीवार से सटाकर है। बैड के पास टेबल पर जग व अन्य सामान रखा गया है। बैडरूम में खिड़की है जो सड़क पर खुलती है।

विन्सेंट के बैडरूम की आकृति आयताकार न होकर समलंब चतुर्भुज के समान थी। पेंटिंग में अधि. कतर ज्यामितीय आकृतियों का उपयोग किया गया है। जैसे कि बैडफ्रेम, चित्रफैम, टेबल कुर्सियां, खिड़की व दरवाजों को चित्रित करने के लिए किया गया है। बैडकवर, कुशन हैंगर पर लटकाने वाले कपड़े आदि से कुछ सामंजस्यपूर्ण आकार बनाए गए हैं।

''उन्होंने चित्र इस चित्र को जापानी प्रिंटों की शैली में बनाया।''[4] जिसके परिणामस्वरुप इस पेंटिंग की संकल्पना काफी साधारण है। इसमें छाया को न दर्शाकर गहरे रंग की रूपरेखा को बनाया गया है। जापानी प्रिंट की तरह स्वच्छंद सपाट रंगतों से तूलिकाघात लगाए गए हैं।

''दीवारों के परदे हटाने के बाद उसने कमरे को थियो के वास्ते कैनवास पर उतारा, ताकि थियो देख सके उसका कमरा कितना शांतिदायक है...।''[5]

अतः इस पेंटिंग में वानगो द्वारा सुव्यवस्थित एवं सुसज्जित बैडरूम को चित्रित किया गया है। वानगो को यह पेंटिंग अतिप्रिय थी इसलिए इसका चित्रण उन्होंने तीन बार किया। तीनों पेंटिंग में रचना विवरण व रंग के मामूली बदलाव के बावजूद लगभग समानता है। इस पेंटिंग को यथार्थवादी दृष्टिकोण से चित्रित नहीं किया गया क्योंकि वह आरामदायक एवं सुखद भाव दर्शाना चाहते थे।

(ख) माई बेड ;डल इमकद्ध :-

ट्रेसि एमिन की यह कलाकृति सन् 1998 में निर्मित की गई। सन् 1999 में एमिन ने अपनी पहली एकल प्रदर्शनी "एवरी पार्ट ऑफ मी इज बिल्डिंग" लगाई जिसमें उन्होंने "माई बेड" नामक कलाकृति को प्रदर्शित किया। "इस कलाकृति के लिए उनका नामांकन "टर्नर प्राइज" के लिए भी हुआ।"[6] इसमें लोक मर्यादा की चरम सीमा को पार करते हुए स्वयं के बिगड़े हुए बेतरतीब बिस्तर को प्रस्तुत किया गया था। ट्रेसि एमिन के प्रेम संबंध टूटने से वह गंभीर रूप से अवसादग्रस्त हो जाती है। वे कई सप्ताह बिस्तर पर नशा करते हुए, खाते हुए, सोते हुए व काम-क्रिया करते हुए बिताती है। उनका अव्यवस्थित बिस्तर निराशा के भाव प्रकट कर रहा है।

बिस्तर के पास में दैनिक जीवन में इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं का ढ़ेर, शराब की खाली बोतलें, एक जोड़ी गंदी चप्पल, सिगरेट के खाली डिब्बे, खून के धब्बे लगे अंतःवस्त्र, काम-क्रिया से जुड़ा हुआ सामान सम्मिलित है। यदि ऐसा कहा जाए कि यह संपूर्ण संयोजन जवान महिला कलाकार के "आत्मचित्र" को निर्मित करता प्रतीत हो रहा है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने स्वयं के जीवन के विशाद के क्षणों को अपनी रचनाओं में निडरता से प्रकट किया। यदि कोई साधारण व्यक्ति होता तो इन समस्त वस्तुओं को चद्दर में लपेटकर कूड़ेदान में फेंक देता परंतु एमिन ने बेतरतीब बिस्तर को विशिष्ट व्यक्ति की तरह देखा जिससे वह एक कलाकृति में तब्दील हो गया।

"इस कृति के लिए आधारभूत भूमिका का निर्वाह मार्शेल धुंशा की "रेडीमेड" अवधारणा और एंडी वारहोल की "ब्रिलोब्रोक्स" नामक कलाकृति रही है।"[7] यह कृति रोबर्ट रोशनबर्ग की पेंटिंग "बेड" (1955) से भी संबंधित रही है। ट्रेसि एमिन की रचनाओं में से "माई बेड" ने लोकप्रियता के शिखर को प्राप्त किया। इस कृति के माध्यम से उन्होंने एक बड़े दर्शक वर्ग का निर्माण कर दिया। विषय-वस्तु की नवीनता के कारण भी यह कृति काफी लोकप्रिय हुई। इस कलाकृति को अब तक विभिन्न प्रदर्शिनियों में प्रदर्षित किया जा चुका है।

दोनों कलाकारों की कलाकृतियों में जमीन आसमान का अंतर दृष्टिगोचर होता है जहां एक तरफ वानगो शांति की खोज कर एक व्यवस्थित जीवन की आशा कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ ट्रेसि एमिन ने अपनी अव्यवस्थित जीवन को हुबहू प्रदर्शित किया है। दोनों कलाकृति के माध्यम में भी काफी अंतर है। जहां वानगो ने कैनवास पर तेलरंग से बैडरूम को चित्रित किया है वहीं ट्रेसि एमिन ने रेडीमेड कलाकृति की संकल्पना को अपनाकर स्वयं के बेड को ही प्रस्तुत कर दिया है।

दोनों ही कलाकृतियाँ कलाकार के उस दौर के उनके मानसिक स्थिति का विश्लेषण करती है। जहां वानगो की कलाकृति कलाकार के सुख, आनंद व प्रसन्नता की तलाश को दर्शाती है, वहीं एमिन की कलाकृति उनकी निराशा, अवसाद विशाद को प्रदर्शित करती है।

वानगो ने जहाँ पीले रंग का बहुतायात से प्रयोग किया है। जो कि प्रसन्नता व उनके आशावादी होने का प्रमाण है। वहीं ट्रेसि एमिन ने सफेद रंग को मुख्य रूप से प्रदर्शित किया है जोकि उनके अकेलेपन व निरूत्साह की स्थिति को दर्शाता है।

वानगो की कलाकृति व्यवस्थित व संयोजन से परिपूर्ण है। सुसज्जित कमरे में ठहराव व शांति को प्रकट कर रहे हैं। ट्रेसि एमिन की कलाकृति उनके प्रिय के साथ संबंध-विच्छेद होने से उत्पन्न अवसाद की स्थिति दिखाई देती है।

अवसाद की स्थिति में एक महिला द्वारा स्वयं पर बीतने वाली परिस्थितियों को प्रत्यक्ष रूप से हुबहू दर्शाया गया है। यही बेबाकपन इन्हें सुर्खियों में ले आया। जिस वक्त महिलाएं अपने प्रेम संबंधों को बताने में भी संकोच करती थी वहीं ट्रेसि एमिन ने रिश्ता टूटने के बाद एक महिला के मन के अवसाद की स्थिति को ईमानदारी से प्रकट किया। उन्होंने वो सभी नशा करने की वस्तुओं को जो कि आमतौर पर पुरुषों के साथ सार्वजनिक रूप से प्रदर्षित किया जाता है। वो एक महिला होकर निडरता से उन वस्तुओं जैसे कि शराब व सिगरेट को अपनी मनःस्थिति व अवसाद के साथी के रूप में उनका चुनाव कर सभी के सामने निःसंकोच रूप से प्रकट किया।

जहाँ वानगो ने सार्वजनिक समाज की सीमा के अंतर्गत व्यवस्थित जीवन को चित्रित किया। जैसे व्यव. स्थित किए हुए कपड़े, पेंटिंग बेडशीट, फर्नीचर जो कि सभी के सामने लोकलाज के भाव को लिए है।

वहीं ट्रेसि एमिन का बेड सभी सामाजिक बंधनों को तोड़ते हुए निर्भीकता से अव्यवस्थित जीवन को दिखाता है जैसे कि बेतरतीब बैड, बिखरी हुई वस्तुएँ, खून से सने अंतःवस्त्र जो कि सार्वजनिक रूप से दिखाने में हिचकचाहट को महसूस नहीं कर, सामाजिक नियमों को तोड़ती हुई प्रतीत होती है।

वानगो ने बैडरूम नामक कलाकृति से प्रभाववाद को समाप्त करने का प्रयास किया है तथा आगामी कलाकारों को अभिव्यंजनावादी शैली में रचना करने को प्रेरित किया है। वानगो के काल में अपने भावों के अनुसार चित्र बनाकर उसमें कल्पना के अनुसार रंगाकन करने की स्वतंत्रता नहीं थी।

वहीं ट्रेसि एमिन के समय पुरुष प्रधान समाज में एक महिला कलाकार को इतनी निर्भीकता से आत्मकथात्मक रचना करने की क्षमता नहीं थी। अतः ट्रेसि एमिन की रचनाओं से दुःख, निराशा,

शर्मिंदगी, तिरस्कार के बावजूद जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है।

निश्कर्षः- जिस तरह वानगो ने अपने भावों का प्रकटीकरण ‘‘बैडरूम‘‘ कलाकृति के जरिए किया है। उसी तरह ट्रेसि एमिन ने ‘‘माईबैड‘‘ कलाकृति में अपने भावों को प्रकट किया है। दोनों कलाकारों की मानसिकता व तत्कालीन परिस्थिति का चित्रण कलाकृतियों में दृष्टिगत है। अतः यह आवश्यकता नहीं कि कलाकृति का उद्देश्य वही हो जो प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगत है बल्कि उसका उद्देश्य अप्रत्यक्ष रूप से उसकी विषय-वस्तु में समाहित रहता है व दर्शकों के मन में उसी तरह के भाव प्रकट करना है जिस तरह के भाव कलाकार ने रचना करते समय महसूस किए हैं। दोनों कला. कारों ने अपने सुख-दुःख को दर्शकों तक पहुँचा कर उसी के आधार पर एकता का अनुभव करवाया है। साथ-साथ समाज को यह संदेश दिया है कि किस तरह व्यक्ति अपनी नकारात्मकता को कला के जरिए साकारात्मकता में तबदील करे।

दोनों ही कलाकार तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति व मनोःस्थिति से संघर्ष करते हुए अपने कार्यों से कला की नई परिभाषा व सौंदर्यशास्त्र गढ़ते प्रतीत होते हैं।

सन्दर्भः

Madina, Angle, Miguel. “Tracey Emin: Life Made Art, Art Made From Life.” www.mdpi.com/journal/arts, ISSN 2076 0752,2014,p.67. doi:10.3390/ arts 3010054.Accessed25july2020.

www.vggallery.com.online. brooks@vggallery.com.3September2020.david brooks Toronto,canda ,http://www.vggallery.com/painting/p-0482.htm. Accessed5June2020.

इरविंग, स्टोन. लस्ट फोर लाइफ, संवाद प्रकाशन, मेरठ, 2006, पृ. सं. 377

---. पृ. सं. 386

---. पृ. सं. 386

महावर, कृष्णा. पश्चिमी संस्थापन कला, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2019, पृ. सं. 83

---. पृ. सं. 83

Madina, Angle, Miguel. “Tracey Emin: Life Made Art, Art Made From Life.” www.mdpi.com/journal/arts, ISSN 2076-0752,2014,p.59. doi: 10.3390/arts 3010054.Accessed 25july2020.

-Jonson , C. “Emin is Screaming: Empathy as Affirmative Engagement in Tracey emin’s Homage to Advard Munch and all my dead children’’ (1998). Parallax 2010, pp.- 96-104.